लोकगाथा का स्वरूप विकास

प्रो0 पवन अग्रवाल

हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग

लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

2020

प्रस्तावना

'लोकगाथा' लोकसाहित्य की प्रमुख विधा है। हिन्दी क्षेत्र में प्रचलित आल्हा, ढोला, चनैनी, नयकवा बंजारा, राजा भरथरी, राजा गोपीचंद आदि गाथाएँ इसी श्रेणी में आती हैं। हिन्दी साहित्य में चर्चित 'ढोला-मारू-रा-दूहा', जयमयंक-जसचंद्रिका, आदि भी इसी श्रेणी की हैं।

- ‘लोकगाथा’ को महाराष्ट्र में ‘पंवाड़ा’,
- गुजरात में ‘कथागीत’,
- राजस्थान में ‘गीतकथा’,
- कन्नौज में ‘साको’ आदि नामों से जाना जाता है।
- ‘लोकगाथा’ के समकक्ष अंग्रेजी में Ballad शब्द प्रचलित है।
- Ballad = Ballare (Letin) = नाचना
- जर्मनी में इसे - VOLC SLIDER,
- डेनमार्क मे - FOLC VIZER कहते हैं।

(क) गीत कथा और लोकगाथा में अन्तर

गीतकथा में एक लोककथा पदबद्ध होती है जबकि लोकगाथा में अन्तर्कथाएँ सन्निहित होती हैं और आकार बड़ा।

(ख) लोककथा और लोकगाथा में अन्तर

१. लोककथाएँ धार्मिक, सात्त्विक, श्रृंगार, नीति से सम्बन्धित होती है जबकि लोकगाथाएँ सम्पूर्ण जीवन की अभिव्यक्ति होती है।

२. लोककथा की शैली वाचनिक होती है जबकि लोकगाथाएँ गेय पद्धति पर आधारित होती है।

३. लोककथाओं का कथावाचक एक होता है जबकि लोकगाथाओं में सामूहिक गायन की पद्धति प्रचलित है।

(ग) लोकगीत और लोकगाथा में अन्तर

लोकगीत में क्षण/अथवा विशेष परिस्थिति का भावात्मक घनत्व होता है जबकि लोकगाथाओं में देशकाल, वातावरण, प्रवृत्ति के साथ-साथ जीवन के सभी पक्ष जुड़े रहते हैं।

‘लोकगाथा’ के सन्दर्भ में पाश्चात्य अवधारणा

(अ) Prof. G. L. Kiffredge - A ballad is a song that tells a story or to take the other point of view a story told in song.

(ब) Frank Sidzwick- Simple narrative (वर्णनात्मक) songs that belongs to the people and handed on by word of mouth.

(स) F. B. Gummere - A Poem meant for singing, quick impersional (नितान्त वैयक्तिक शून्य) in material probaly connected in its origin with the Communal dance but submitted to a process of oral tradition among people.

(द) W. P. Ker- 'बैलेड वह कथात्मक गेय काव्य है जो लोककण्ठ में ही उत्पन्न होता है तथा लोकगाथा के सामान्य रूप विधान को लेकर किसी विशेष कवि द्वारा रचा जाता है, जिसमें गीतात्मकता और कथात्मकता दोनो होती हैं। और जिसका प्रचार जन साधारण में मौखिक रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में होता रहता है।'

(य) अंग्रेजी विश्वकोश– बैलेड एक ऐसी पद्य शैली का नाम है जिसका रचयिता अज्ञात हो, जिसमें साधारण आख्यान हो और सरल मौखिक परम्परा के लिए उपयुक्त तथा अलंकृत शैली ललित कला की सूक्ष्मताओं से रहित हो।

‘लोकगाथा’ के सन्दर्भ में भारतीय अवधारणा

- **कृष्णचन्द्र अग्रवाल–** लोकगाथा लोकसाहित्य की वह विधा है जिसमें किसी एक कथा का वर्णन गीतात्मक ढंग से किया जाता है। इसमें कहानी और गीत दोनों के गुण विद्यमान है। कहानी के अंग- कथानक, चरित्र, संवाद आदि तथा गीत के तत्त्व जैसे लय, ताल, टेक आदि का समावेश लोकगाथा में रहता है।
- **डॉ शंकरलाल यादव–** लोकगाथा को ‘लोक महाकाव्य’ कहते हैं।

‘लोकगाथा’ की विशेषताएँ–

१. अधिकांशतः अज्ञात रचयिता होते हैं।

२. मौखिक परम्परा के कारण मूल पाठ का अभाव होता है।

३. संगीत और नृत्य का अभिन्न साहचर्य (वाद्यों की चर्चा सारंगी- गोपीचन्दा, ढोला, चिमटा- आल्हा)

४. स्थानीयता का प्रचुर पुट (क्षेत्रीय संस्करण के कारण)।

५. अलंकरण शैली के स्थान पर सहजता- ‘माँ और शिशु का वार्तालाप’, गूमर।

६. उपदेशात्मक प्रवृत्ति गौण होती है।

७. समुदाय या लोकथाटी के कारण रचयिता के व्यक्तित्व का अभाव।

८. वृहद् कथानक।

९. टेकपदों की पुनरावृत्ति- सिजविक, गूमर, डॉ० के० डी० उपाध्याय इसे महत्त्वपूर्ण विशेषता मानते हैं।

१०. संदिग्धता, अतिरंजना, काल्पनिकता।

‘लोकगाथा’ उत्पत्ति सिद्धान्त–

- **विलियम ग्रिम और गूमर (जर्मनी)– समुदायवाद–** लोकगाथा का निर्माण व्यक्ति द्वारा न होकर समुदाय द्वारा।

  डॉ० रामनरेश त्रिपाठी भी इस मत से सहमत लगते हैं
- **ए0 डब्लू0 श्लेगल (जर्मनी)– व्यक्तिवाद–** विशेष व्यक्ति, कलात्मक कृति कलाकार की अपेक्षा रखती है उसी प्रकार कविता किसी कवि की। ठीक उसी प्रकार लोकगाथाओं के मूल में एक व्यक्ति है।
- **आलोचना–** व्यक्ति विशेष की सम्पत्ति न होकर सम्पूर्ण जाति की धरोहर है।

- **स्टेंथल– जातिवाद–** समस्त जाति द्वारा निर्माण (डॉ० उपाध्याय- 'कुछ चुने हुए लोग' कहते हैं।)

  आलोचना– यह उक्ति उतनी ही हास्यास्पद है जितनी कि समग्र जाति शासन करती है।

- **विशप पर्सी– चारणवाद (इग्लैंड)–** चारणों अथवा भाटों द्वारा जीविकोपार्जन के लिए इनका गायन किया जाता है।

  आलोचना– लेकिन सभी रचनाएँ चारणों की नहीं है ऐतिहासिकता से सम्बन्धित कथाएं सम्भवतः उनकी हों।

- **प्रो० चाईल्ड– व्यक्तित्त्व ही व्यक्तिवाद–** यह श्लेगल के सिद्धान्त में सुधार है। व्यक्ति के द्वारा रची जाकर भी लोकथाती के कारण रचनाकार का अस्तित्व लुप्त हो जाता है।

  कारण– मौखिक परम्परा।

❖ **के0 डी0 उपाध्याय– समन्वयवाद–** लोकगाथाओं की उत्पत्ति के सम्बन्ध में उपर्युक्त प्रचलित सिद्धान्त कारणभूत है। इन सबका का सहयोग इन गाथाओं के निर्माण में हुआ है। ‘‘प्रत्येक गीत का गाथा का रचयिता कोई न कोई व्यक्ति अवश्य है साथ ही कुछ गीत या गाथा जनसमुदाय का भी प्रयास हो सकता है। लोकगाथा की परम्परा सदा से मौखिक रही है। अतः यह बहुत ही सम्भव है कि गाथाओं के रचयिताओं का नाम अज्ञात हो गया है। एक लेखक होने पर भी मौखिक परम्परा के कारण भिन्न-भिन्न गवैयों ने इन गाथाओं में इतना अधिक अंश जोड़ दिया है कि वे अब लेखक की कृति न होकर पूरे समाज की सम्पत्ति बन गयी हैं।

लोकगाथाओं के प्रकार

आकार के आधार पर– लघु और वृहद् लोक गाथाएँ

कथावस्तु के आधार पर–

गूमर के अनुसार– पाश्चात्य–

प्राचीन गाथाएँ	:	**Oldest Ballad**
कौटुम्बिक गाथाएँ	:	**Kinlip Ballad**
अलौकिक गाथाएँ	:	**Super Nutural Ballad**
निजंधरी गाथाएँ (पौराणिक)		**Legendary Ballad**
सीमांत गाथाएँ	:	**Border Ballad** – जगदेव, अमर सिंह, बाबू कुँवर सिंह।
आरण्यक गाथाएँ	:	**Greawood Ballad** डाकू सुल्ताना, राधाचरण, मानसिंह।

- **प्रो0 क्रीटिज**, विशप पर्शी से प्रभावित होकर इन्हें चारण गाथाएँ, परम्परागत कहते हैं।

भारतीय

- **डॉ0 उपाध्याय–** वीर कथात्मक, प्रेम कथात्मक, रोमांचक ।
- **डॉ0 सत्यव्रत सिन्हा** इनमें योगकथात्मक वर्गीकरण और जोड़ते हैं।

प्रमुख गाथाएँ–

आल्हा, उभदेव का पंवाड़ा, रसौलिया, थोंदी और परसू, ढोला, चनैनी (लोरिकायन), बिहुला विषधरी, शोभा नयकवा, (नयकवा बंजारा), सोरठी, कुसुमा का पंवाड़ा, चन्द्रावली का पंवाड़ा, घन्नईया का पंवाड़ा, सीता वनवास, श्रवण कुमार, राजा भरथरी, राजा गोपीचन्द, जाहर वीर का पंवाड़ा, खुनखुनिया।

धन्यवाद